★लेख-1★

लकार-सिद्धिः।

मित्रों!

संस्कृत हमारी सम्पत्ति है। उसका रक्षण हम नहीं करेंगे तो कौन करेगा? आज १५ अगस्त है। हम आजाद हैं। जब गुलाम थे, तब तो कुछ नहीं कर सकते थे। लेकिन आजाद होने के बाद भी हमने क्या कर लिया संस्कृत और संस्कृति के लिए? आज संकल्प लेते हैं कि अगले पन्द्रह दिनमे कम से कम ५० पाणिनीय सूत्र पढेंगे। अर्थात् रोज का सिर्फ तीन सूत्र पढ़ना है हमें।

उसके लिए हम किसी शब्द कि सिद्धि से शुरुआत करेंगे। जिससे दो फायदे होंगे, शब्दसिद्धि होगी और सूत्र का उपयोग कैसे हुआ, यह भी पता चलेगा।

पहले " लिखति " इस शब्द की सिद्धि करते हैं।

लिखति में तीन भाग हैं -

लिख् जो धातु है,

शप् जो विकरण प्रत्यय है,

तिप् जो तिङ् प्रत्यय है,

अर्थात् लिख् + शप् + तिप् का ही लिखति हुआ. लेकिन कैसे?

लिखति कि सिद्धि से ही हम कम से कम बीस सूत्र सीख लेंगे.

तो यहाँ जो तीन भाग दिखाये उनको एक-एक कर के देखते हैं। और यहां प्रयुक्त सूत्रों का भी मनन करते हैं.

पहला भाग है लिख्.

ये कहां से आया? तो पाणिनिजी ने जो धातुपाठ लिखा है, वहां से. लेकिन धातुपाठ में तो लिखँ ऐसा है. यहां तो लिख् है. अर्थात् लिखँ का ही लिख् हुआ है. कैसे?

लिखँ क्या है? ल् इ ख् अँ.

लिख् क्या है? ल् इ ख् .

अर्थात् इतना तो ज्ञात होता है कि पीछे का जो अँ है वह गायब हो गया. कैसे?

जैसे आडवाणी को निकालना हो तो सीधे-सीधे नहीं निकाल सकते न. मोदी ने कहा कि आपने बहुत काम किया है, आप वृद्ध हो गये। आप को आराम करने का समय ही नहीं मिला, अब आप आराम कीजिए तथा आप जिम्मेदारी को हमें दे दीजिये. और ऐसे उसका पत्ता काट दिया.

ऐसे ही यहा अँ हो हटाना हो तो ऐसे ही नहीं हटा सकते न, फिर कैसे? उसको इत् (वृद्ध) कह दो फिर निकाल दो.

तो पहला सूत्र जो इत् संज्ञा करता है,

1) उपदेशेऽजनुनासिक इत्

उपदेशे अर्थात्? तो पाणिनिजी ने धातुपाठ में जो मूल धातु कही है, उसको उपदेश कहेंगे. लिख् कि मूल धातु लिखँ है.

अजनुनासिक अर्थात् अच् (सभी स्वर) + अनुनासिक (ँ)

लिखँ [ल् इ ख् अँ] में जो अँ है, वह अच् भी है और अनुनासिक भी है. तो उक्त सूत्र से उसकी इत्-संज्ञा हो गई.

आडवाणी को कह दिया गया कि आप वृद्ध हो गये. अब उसको हटाना आसान हो गया. कैसे? दूसरे सूत्र से

2) तस्य लोपः

किसका लोप? जो इत् हुआ उसका. लिखँ में कौन इत् हुआ? अँ

लेकिन लोपः अर्थात्? उसके लिए तीसरा सूत्र
3) अदर्शनं लोपः
जिसका अदर्शन हो जाये, जो गायब हो जाये, आडवाणी की तरह हट जाये उसको लोप कहते हैं. अर्थात् लिखँ में जो अँ है, वह हट जाये तो उसको लोप कहते हैं.

तो हमने क्या किया? लिखँ को लिख् बना दिया. कैसे? तीन सूत्रों से
1) उपदेशेऽजनुनासिक इत्
2) तस्य लोपः
3) अदर्शनं लोपः

तो आज के तीन सूत्र हो गये.
आगे क्या देखना है?
लिख् + शप् + तिप्
लिख् + अ + ति » लिखति
यहा शप् का अ और तिप् का ति कैसे हुआ?
क्रमशः......

★लेख-2★
अब पांच छोटे सूत्र कर लेते है जो लिखति की सिद्धि-अन्तर्गत ही है.
लिख् + शप् + तिप् इसमे-
लिख् धातु है
शप् विकरण-प्रत्यय है
तिप् तिङ्-प्रत्यय है
अर्थात् एक धातु और दो प्रत्यय.
लेकिन लिख् की धातुसंज्ञा कैसे हुई? इस सूत्र से,
4) भूवादयो धातवः
अर्थात् भू आदि जो है उनको धातु कहते है.
अब दुसरा प्रश्नः शप् और तिप्, ये दोनो प्रत्यय धातु के पिछे हि क्यो? _शप् + तिङ् + लिख_
ऐसे आगे क्यो नही? उसके लिये तिन सूत्र है
5)धातोः
6) प्रत्ययः
7) परश्च
तिनो सूत्रो को मिलाये तो अर्थ होगाः
_जो प्रत्यय है वह धातु के पर (पिछे) हि होगा, न की आगे._
अब ये प्रश्न होगा कि शप् और तिप् मे भी तो तिप् आगे और शप् पीछे आ सकता है न!
_लिख् + तिप् + शप्_ ऐसा भी तो हो सकता है!
उसका उत्तर इस सूत्र से मीलेगा..
8) कर्तरि शप्
इस सूत्रमे " धातोः" और " सार्वधातुके " इन दोनो कि अनुवृति आकर पूर्ण सूत्र इस तरह बनेगाः " धातोः सार्वधातुके कर्तरि शप् ".

अर्थात् _कर्तरि-वाक्यरचनामे लिख्-धातु के बाद, तिप्-सार्वधातुकप्रत्यय से पूर्व, शप्-विकरणप्रत्ययः होता है._
अर्थात्
पहले धातु
अन्तमे तिप्
बिच मे शप्
आज पांच सूत्र हो गये.
क्रमशः.......

★लेख-3★
अभी तक 8 सूत्र किये.
हम लिखति कि सिद्धि कर रहे थे.
लिखँ+ शप् + तिप्
लिख् + अ + ति
लिखँ का लिख् कैसे हुआ यह हमने देखा.

आज शप् का अ कैसे हुआ वह देखते है.
शप् » श् अ प्
ये तो ज्ञात होता ही है कि श् और प् गायब हो जाते है. लेकिन कैसे? दो सूत्र से.....
9) लशक्वतद्धिते
यहा " उपदेशे, प्रत्यय, आदिः, इत् " इन चारो कि अनुवृति आ रही है. सूत्र का अर्थ हुआ...
मुलप्रत्यय के आदिमे यदि ल्, श्, या कवर्ग(क् ख् ग् घ् ङ्) हो तो उसकी इत् संज्ञा होती है अडवाणी को कहा गया कि आप वृद्ध हो गये.
शप् उपदेश-अवस्थामे भी है
शप् प्रत्यय भी है
शप् मे शकार आदि-पहले भी है
तिनो शरते पुरी हुई, अतः शप् के शकार कि इत्-संज्ञा हो गई. फिर " तस्य लोपः " सूत्र से उसका लोप हो ही जायेगा. अडवाणी का पत्ता कट ही जायेगा.

तो शप् मे अब क्या बचा? अप्.
लेकिन हमे तो अ तक पहुचना है. तो फिर पकार को भी हटाना होगा. तो पहले इत् संज्ञा करनी पडेगी न. उपरोक्त सूत्र से तो नहि होगी क्योकि प् तो अन्त मे है और वह सूत्र तो आदि-वर्ण कि इत् संज्ञा करता है. अर्थात् कोइ और सूत्र होना चाहिये जो अन्तमे रहनेवाले वर्णकी इत् संज्ञा करता हो. ये रहा....
10) हलन्त्यम्
हल् + अन्त्यम्
यहा " उपदेशे, इत् " इन दोनो कि अनुवृति आती है. पूर्णसूत्र हुआ " उपदेशे अन्त्यम् हल् इत् "
अर्थात् _उपदेश-अवस्थामे जो हल् अन्तमे हो उसकि इत् संज्ञा होती है_
अब अप् मे पकार अन्त मे भी है और हल् (व्यंजन) भी है, तो उसकि इत् संज्ञा होकर " तस्य लोपः " सूत्र से गायब भी हो गया.
शेष क्या रहा? अ.
अब रही बारी तिप् कि. तो तिप् का ति कैसे होगा? पकार का यदि लोप हो जाये तो. तिप् मे जो प् है वो हल् भी है और

अन्तमे भी है. अर्थात् यहा भी शप् कि तरह ही प का लोप होगा, हलन्त्यम् इस सूत्रसे. तो हो गया तिप् का ति.
अर्थात्
लिखँ + शप् + तिप् »»»» लिख् + अ + ति
लिखति सिद्ध हो गया.

आज दो सूत्र हो गये.
क्रमशः.....

★लेख-4★
इससे पहले लिखँ का लिख् / शप् का अ / तिप् का ति कैसे हुआ वो देखा. वैसे तो लिखति सिद्ध हो ही गया ऐसा लगता है. लेकिन इससे भी अधिक सूत्र लगते है. कौन से?
लिख् + शप् + तिप्
यहा जो तिप् है वो सीधा हि वहा नही आया. पहले तो वहा " लट् " था. उसका ही " तिप् " हुआ? कैसे? आगे देखते है....

रामः लिखति। इस वाक्यका अर्थ होता है, _राम लिखता है_ अर्थात् यह वर्तमानकाल कि बात हो रही है. संस्कृत मे अलग-अलग काल मे भिन्न-भिन्न प्रत्यय होते है. वर्तमानकालमे कौनसा प्रत्यय होता है? उसके लिये स्वतन्त्र सूत्र ही है...
11) वर्तमाने लट्
अर्थात् कोइ क्रिया को वर्तमानमे दिखानी हो तो लट् प्रत्यय होता है.
यदि लिख् धातु का वर्तमानकालका रुप बनाना हो तो लट् प्रत्यय होगा.
लिख् + लँट्
अब यहा टकार हल् [व्यंजन] भी है, अन्तमे भी. तो _हलन्त्यम्_ सूत्रसे उसकी इतसंज्ञा और _तस्य लोपः_ सूत्रसे लोप भी हो गया. शेष क्या रहा?
लँ. अर्थात् ल् + अँ
यहा जो अँ है वो अच् [स्वर] भी है, अनुनासिक भी. तो _उपदेशेऽजनुनासिक इत्_ सूत्र से इतसंज्ञा और _तस्य लोपः_ से लोप भी हो गया. अब क्या बचा शेष? ल्.
लेकिन हमे तो तिप् तक पहुचना है. यहा तो ल् है. अर्थात् मंजिल अभी दूर है.....
एक और सूत्र देखते है....
12) लस्य
अर्थात् " ल् के स्थानमें "ऐसा अर्थ होगा. लेकिन ल् के स्थानमे क्या? एक और सूत्र देखते है...
13) तिप्तस्झिसिप्थस्थमिब्वस्मस्ताऽतांझथासाथाम्ध्वमिड्वहिमहिङ्

इतने बडे सुत्र से डरने की जरुरत नही है क्योकि उसका उपयोग हम संस्कृतमे रोज करते है. ये कुल 18 प्रत्ययोका समूह है जो एक ही सूत्रमे लिखे है. अर्थात् ल् के स्थान मे ये 18 प्रत्यय होते है. उनमेसे जो पहले 9 प्रत्यय है वे परस्मैपद के लिये और बाकीके 9 आत्मनेपदके लिये. सुविधा के लिये प्रथम/मध्यम/उत्तमपुरुष और एक/द्वि/बहुवचन के रूपमे लिखते है....

परस्मैपदके 9 प्रत्यय

	एक	द्वि	बहु
प्रथम	तिप्	तस्	झि
मध्यम	सिप्	थस्	थ
उत्तम	मिप्	वस्	मस्

आत्मनेपदके 9 प्रत्यय

	एक	द्वि	बहु
प्रथम	त	आताम्	झ
मध्यम	थास्	आथाम्	ध्वम्
उत्तम	इट्	वहि	महिङ्

(याद रहे : हमे ल् के स्थानमे तिप् लाना है.)
किन्तु उपरोक्त विभाग (परस्मैपद और आत्मनेपद) बिना सूत्रके हो ही नहि सकता न.
उसके लिये दो सूत्रकी जरुरत पडेगी.
14) लः परस्मैपदम्
अर्थात् ल् के स्थानमे जो 18 प्रत्यय होते है वे परस्मैसंज्ञक होते है. यदि सभी 18 प्रत्ययो की परस्मैपदसंज्ञा होगी तो आत्मनेपद कहा जायेगा? उसके लिये दूसरा सूत्र है...
15) तङानावात्मनेपदम्
अर्थात् तङ् कि आत्मनेपदसंज्ञा होती है. तङ् क्या है? उपरोक्त 18 प्रत्ययमे 10 से लेकर 18 तक जो भी प्रत्यय है, यानि पीछले 9 प्रत्यय, उनकी आत्मनेपदसंज्ञा होती है. अर्थात् पहले तो सबको परस्मैपदसंज्ञक कह दिया, बादमे पीछेवाले 9 को आत्मनेपदसंज्ञक कह दिया. तो पहलेवाले 9 तो परस्मैपदसंज्ञक हि रहेंगे.

आज हमने 5 सूत्र किये.
क्रमशः....

★लेख-5★
हम लिखति कि सिद्धि कर रहे थे. हमे ल् के स्थान मे तिप् लाना है. पीछले लेख मे देखा कि ल् के स्थान मे 18 प्रत्यय होते है. उनके भाग कर दिये नौ नौ के. और परस्मैपद और आत्मनेपद संज्ञा करदी. लेकिन फिर उनके प्रथमपुरुष / मध्यमपुरुष / उत्तमपुतरुष और एकवचन / द्विवचन / बहुवचन ऐसे जो विभाग हमने पीछे किये वे बिना सुत्र के कैसे हो गये? नहि... उनके लिये ये दो सूत्र है..
16) तिङस्त्रीणि त्रीणि प्रथममध्यमोत्तमाः
अर्थात् तिङमें 18 प्रत्यय जो थे उनके क्रम से यदि तिन तिन जोडे बनादे तो कितने जोडे बनेंगे? 6.
_1) तिप् तस् झि_
_2) सिप् थस् थ_
_3) मिप् वस् मस्_
_4) त आताम् झ_
_5) थास् आथाम् ध्वम्_
_6) इड् वहि महिङ्_
फिर उनको क्रम से _ प्रथम / मध्यम / उत्तम ऐसा नाम दे दे. अर्थात्,
_1) तिप् तस् झि_ = प्रथम
_2) सिप् थस् थ_ = मध्यम
_3) मिप् वस् मस्_ = उत्तम
_4) त आताम् झ_ = प्रथम
_5) थास् आथाम् ध्वम्_ = मध्यम
_6) इड् वहि महिङ्_ = उत्तम

अब प्रथमादि संज्ञा तो हो गइ. लेकिन एकवचनादि संज्ञा का क्या? उनके लिये ये सूत्र है..
17) तानि एकवचनद्विवचनबहुवचनानि एकशः
यहा " तिङः त्रीणि त्रीणि " कि भी अनुवृति आ रही है. अर्थ हुआ _हमने जो तिन तिन के छे जोडे बनाये उन प्रत्येक मे जो तिन तिन प्रत्यय है उनकि एकैक के क्रम से एकवचन / द्विवचन / बहुवचन ऐसी संज्ञा होती है._
अर्थात् यदि पहला जोडा हम ले तो वह है _(तिप् तस् झि)._ उनमे प्रत्येक कि एक एक करके क्रम से एकवचन (तिप्) / द्विवचन (तस्) / बहुवचन (झि) ऐसी संज्ञा होती है. ऐसा ही बाकि के जोडे के बारे मे जाने. (हमे ल् के स्थान मे तिप् लाना है)

अब प्रथमादि संज्ञा तो हो गई लेकिन ये कैसे तय करे कि अस्मद्(मेरी)-युष्मद्(आपकी)-तत्(उसकी)कौनसी संज्ञा होगी? अंग्रेजी भाषा मे तो प्रथमपुरुष कि अस्मद् (जो बोल रहा है वह स्वयं)संज्ञा होती है. संस्कृत मे क्या होता है? तो उनके लिये तिन सूत्र है....
18) अस्मदि उत्तमः
अस्मद् अर्थात् मे. इस सूत्र से अस्मद् के स्थानमे उत्तमपुरुष के प्रत्यय होते है. यानेकि मिप्-वस्-मस्.
19) युष्मदि मध्यमः
युष्मद् अर्थात् तु. इस सूत्र से युष्मद् के स्थान मे मध्यमपुरुष के प्रत्यय होते है. यानेकि सिप्-थस्-थ.
20) शेषे प्रथमः
शेषे अर्थात् वह. इस सूत्र से शेष (वह) के स्थान मे प्रथमपुरुष के प्रत्यय होते है. यानेकि तिप्-तस्-झि.

अब हम _रामः लिखति_ कि सिद्धि कर रहे थे. रामः क्या है? अस्मद् भी नही, युष्मद् भी नही. अर्थात् शेष है. शेष मे कौन से प्रत्यय होते है? तिप्-तस्-झि.
लेकिन् यहा राम के लिये इन तिनो मे से कौनसा प्रत्यय लगेगा? इसके लिये दो सूत्र है...
21) द्व्येकयोर्द्विवचनैकवचने
अर्थात् दो कि बात हो रही हो तो द्विवचन होगा और एक की बात हो रही हो तो एकवचन होगा.
22) बहुषु बहुवचनम्
अर्थात् बहुत लोगो की बात हो रही हो तो बहुवचन होआ.

यहा कितने राम कि बात हो रही है? एक राम की. तो एकवचनका जो प्रत्यय है, अर्थात् तिप्, वह होगा, क्योकि तिप् कि एकवचनसंज्ञा हमने पूर्व हि करदी है.
अर्थात् रामः लिख् + शप् + तिप् ऐसा होगा. जिसके लिये हम कब से प्रयन कर रहे थे वो ल् के स्थान मे तिप् हो गया.
एकबार संक्षेपमे फीरसे देखले...
लिखँ+ लँट्
लिख् + ल्
लिख् + तिप्तस्झि......
लिख् + तिप्
लिख् + शप् + तिप्
लिख् + अ + ति
लिखति यह सिद्ध हो गया.
आज हमने 6 सूत्र किये..
आगे क्या देखेंगे?
यहा लिख् + शप् + तिप् मे श-विकरण प्रत्यय होता है, फिर शप् क्यो लिखा?

क्रमशः.......
आज 6 सूत्र किये.
(यहा सूत्र 18 और 19 थोडे बडे है लेकिन लिखति कि सिद्धि के लिये आवश्यक था उतना तो दे दिया है)

★लेख-6★
हमने लिखति कि सिद्धि कि. लेकिन लिख् तो तुदादि गण कि धातु है, फिर वहा शप्-विकरण प्रत्यय क्यो?
पहले ये जानले कि संस्कृतमें जो धातु है उनको 10 गण मे बांटा गया है और सभी गण का एक एक विकरण प्रत्यय भी निश्चित किया गया है. जैसे, भ्वादिगण और चुरादिगण मे शप् प्रत्यय है, दिवादिगण का श्यन् है इत्यादि.

यहा लिख् धातु तो तुदादिगणमे है जिसका विकरण-प्रत्यय तो श है, फिर हमने लिखति कि सिद्धि करते समय शप् क्यो लिखा? उसके लिये सूत्र है......
20) तुदादिभ्यः शः
अर्थात् लिख् + तिप् इस स्थिति मे _कर्तरि शप्_ इस सूत्र से शप् हि होता है लेकिन उपरोक्त सूत्र से वहा श-प्रत्यय आ जाता है क्योकि _तुदादिभ्यः शः_ ये सुत्र _कर्तरि शप्_ सूत्रका अपवाद है. पाणिनियव्याकरण मे अपवादसूत्र सबसे बलवान होता है, इसलिये वहि सूत्र का राज चलता है और वहि सूत्र सिंहासन पर बेठ जाता है.
लिख् + तिप् इस स्थिति मे _कर्तरि शप्_ और _तुदादिभ्यः शः_ ये दोनो सूत्रो के बिच जब संघर्ष होता है तो अपवादसूत्र बलवान होने के कारण वहि जितता है, अर्थात् _तुदादिभ्यः शः_ इस सूत्र कि जित होती है. अर्थात्
लिख् + शप् + तिप्
लिख् + श + तिप् होता है.
फिर पीछली प्रक्रियानुसार ही श मे श् का _लशक्वतद्धिते_ इस सुत्र से इत् संज्ञा होती है, _तस्य लोपः_ सूत्रसे लोप होकर अ शेष रहता है, फिर
लिख् + अ + ति » लिखति सिद्ध हो जाता है.

अब पचति (पकाता है) मे कौनसी धातु है? उत्तरः पच्. पाणिनिजी ने तो उपदेश-अवस्थामे जो धातु लिखि वह तो _डुपचँष्_ है. इसका पच् कैसे हो गया?

ये तो अनुमान कर सकते है कि यहा डु / अँ / ष् ये तिनो गायब हो जाते है. कैसे?
» ष् का तो पीछे दिये गये सूत्र _हलन्त्यम्_ से इत् संज्ञा और _तस्य लोपः_ सूत्रसे लोप होता है.

» चँ के अँ कि _उपदेशेऽजनुनासिक इत्_ सूत्र से इत् संज्ञा और _तस्य लोपः_ सूत्र से लोप.

लेकिन आगे जो डु है उसको कैसे हटाये? पीछे जो हमने एक सूत्र देखा था _लशक्वतद्धिते_ वह भी यहा काम नहि करेगा क्योकि ल/श/कवर्ग इन तिनो मे डु नहि आता. फिर उसको कैसे हटाये? एक और सूत्र देखे जो डु कि इत् संज्ञा करता है.....
21) आदिर्ञिटुडवः
यहा " उपदेशे " कि अनुवृति आकर पुर्ण सूत्र बना " उपदेश-अवस्थामे धातु के आगे यदि टु/डु/ञि इन तिनो में से कोइ एक हो तो उसकि उपरोक्त सूत्रसे इत् संज्ञा हो जाती है. " डुपचँष् मे आगे जो डु है उसकि इस सूत्रसे इत् संज्ञा होकर _तस्य लोपः_ सूत्रसे लोप होकर पच् शेष बचता है.

अब रामौ लिखतः (दो राम लिखते है) इसमे लिखतः » लिख् + श + तस् है.
पीछे जो तस् है उसमे सकार अन्तमे भी है और हल् (व्यंजन) भी है. तो उसकि _हलन्त्यम्_ से इत् संज्ञा होकर _तस्य

लोपः_ सूत्रसे लोप हो जाना चाहिये न. लेकिन ऐसा नहि होता है. क्यो? तस् मे स् कि इत् संज्ञा न हो इसलिये एक निषेधात्मक सूत्र है.....

22) न विभक्तौ तुस्माः

इसमे " हलन्त्यम् , इत् " इन दोनो कि अनुवृति आकर सूत्र का अर्थ हुआ " विभक्ति मे (विभक्ति अर्थात् तिप्-इत्यादि 18 प्रत्यय और सुप्-इत्यादि 21 प्रत्यय) इन 39 प्रत्ययो मे अन्त्य-हल् (व्यंजन) के रुप मे यदि तवर्ग/स्/म् इन तिनो में से कोइ हो तो उसकि इत् संज्ञा नहि होती " फिर उसका लोप तो होगा ही नही.

तस् प्रत्यय विभक्ति-अन्तर्गत भी है, अन्त्य-हल् स् भी है. तो उपरोक्त सूत्र से उसकि इत् संज्ञा नही होती और उसका लोप भी नहि होता. तस् ऐसा ही शेष रहता है.

आज हमने तिन सूत्र किये.

क्रमशः.....

★लेख-7★

अब तक हमने लिखत: की सिद्धि की। और 22 सूत्र किये। हमे कमसे कम 50 सूत्र करने है। आज लिखन्ति इसकी सिद्धि करते है।

लिख् + श + झि

अब हमे ये ज्ञात है कि शप् की जगह श आ जाता है तो आगे शप् न लिखकर श ही लिखेंगे।

हम देख सकते है कि लिखन्ति में पीछे न्ति है। जबकि सुत्ररूप में तो लिख् + श + झि है। अर्थात झि का ही आगे न्ति होनेवाला है।

झि = झ् + इ

इस स्थिति में एक सूत्र देखे,

23) झोऽन्तः

अर्थात् झ् के स्थान् मे अन्त् ऐसा हो जाये।

झ् + इ

अन्त् + इ

अन्ति

तो हो गया झि के स्थानमे अन्ति।

लिख् + श + झि

लिख् + श + अन्ति

लिख् + अ + अन्ति

यहा एक और प्रश्न होगा की उपरोक्त स्थिति में तो " लिखाति " ऐसा बन रहा है। न की लिखति।

अर्थात् पीछे जो (अ + अन्ति) है उसमें से कोई एक अ ही बचता है। कौन से सूत्र से ?

24) अतो गुणे

अर्थात् ऐसी स्थिति में पिछेवाला अ ही बचे ।

लिख् + अन्ति

लिखन्ति हो गया।

अब लिखसि को देखे।
लिख् + श + सिप्
यहा कोई अलग सूत्र की जरूरत नही है क्योंकि पीछे जो सूत्र किये उनकी सहायता से ही सिद्ध हो जाएगा।
» श का _लशक्वतद्धिते_ से इत् और _तस्य लोपः_ से लोपः होकर अ शेष रहा।
» सिप् मे _हलन्त्यम्_ सूत्रसे इत् और _तस्य लोपः_ से लोप होकर सि बचा।

लिख् + अ + सि
लिखसि सिद्ध हो गया।

उसि तरह
लिख् + श + थ » लिखथ

अब लिखामि सिद्ध करते है।
लिख् + श + मिप्
लिख् + अ + मि (पीछे की तरह इत् और लोप होकर)

अब यहा तो लिखमि हो रहा है, लिखामि ऐसा नही। अर्थात् बिचमें अ के स्थानमें आकार हो रहा है। किस सूत्र से ?
25) अतो दीर्घो यञि
अर्थात् मि के आगे का जो अ है उसको दीर्घ हो।
लिख् + अ + मि
लिख् + आ + मि
लिखामि सिद्ध हो गया।

हमने आज 3 सूत्र किये। यहा हमने लिखथः की सिद्धि को क्यो छोड दी ? क्योकि उसमे अधिक दो सूत्र लगते है। इसलिये आगे के लेख मे उसकी सिद्धि करेंगे। उसकी सहायता से ही लिखावः / लिखामः सिद्ध हो जायेगा।
क्रमशः......

★लेख-8★

आज हमें लिखथ: /लिखाव: /लिखाम: की सिद्धि करना है।
लिखथ: = लिख् + श + थस्
थस् में जो स् है वो हल् (व्यंजन) भी है और अन्तमे भी है। तो फिर _हलन्त्यम्_ सूत्र से इत्-संज्ञा होकर _तस्य लोपः_ सूत्र से स् का लोप होना चाहिए। क्यों नही हुआ? इसका कारण पीछे के लेख में देख ही आये है कि _न विभक्तौ तुस्मा:_ सूत्र से इसका निषेध हो जाता है।
अर्थात् थस् ही रहेगा।
लिखथ: = लिख् + अ + थस्

यहा देख सकते है कि थस् के स्थान में थ: हो रहा है। या कहे की स् के स्थान में विसर्ग हो रहा है। कैसे? दो सूत्र से......
26) ससजुषो रु:
अर्थात् थस्-पद में जो स् हैं उसके स्थानमें रु हो जाये।
अब बना थरु। लेकिन हमें तो विसर्ग तक पहुँचना है न। उसके लिए दूसरा सूत्र....

27) खरवसानयो: विसर्जनीय:
यहाँ " रो:, पदस्य " इन दोनों की अनुवृत्ति आ रही है, तो अर्थ होगा _थरु में अन्तमे जो रु है उसके स्थानमें विसर्ग (:) हो जाये।_
अर्थात् थरु >> थ:
फिरसे देखे तो,
लिख् + अ + थस्
लिख् + अ + थरु
लिख् + अ + थ:
वैसे ही लिखाव: और लिखाम: सिद्ध हो जाएगा। सिर्फ एक भेद रहेगा की लिखामि की तरह _अतो दीर्घो यञि_ सूत्र से लिख् का लिखा होकर लिखाव: / लिखाम: हो जाएगा।

आज हमने दो सूत्र किये।
8 दिनमे 27 सूत्र किये।
क्रमशः ....

★लेख-9★
अब तक हमने लिख् धातु के वर्तमानकाल के रूप किये। वैसे तो लिख-धातुके सभी काल के रूप कर सकते है लेकिन पहले ये जो वर्तमानादि काल है वो संस्कृत में कितने है और क्या उनके लिए भी पाणिनिमुनि ने सूत्र बनाये है? उत्तर है हां. 10 काल होते है संस्कृत में। जैसे की, लट् लिट् लुट् लृट् लेट् लोट् लङ् लिङ् लुङ् लृङ् .

यहा देखे तो सभी की शुरुआत ल से होती है। उसलिए उनको " लकार " ऐसा भी कहते है।

दूसरी बात यदि ध्यान में आयी हो तो वह ये की यहा उस ल् को " अ इ उ ऋ ए ओ " इन स्वरों के साथ ही जोड़ा गया है। इससे उनको याद रखने में भी सुलभता होगी। जैसे,

ल् + अ » ल
ल् + इ » लि
ल् + उ » लु
ल् + ऋ » लृ
ल् + ए » ले
ल् + ओ » लो

यहा जो लेट्-लकार है वह सिर्फ वेदों में होता है। और जो लिङ्-लकार है उसके दो प्रकार है : विधिलिङ् और आशिर्लिङ् ।
अर्थात् लेट्-लकार की लौकिक व्याकरण में गणना न करे तो भी लकारे तो 10 ही रहेंगे।
लट् लिट् लुट् लृट् लोट्
लङ् विधिलिङ् आशिर्लिङ् लृङ् लुङ्

अब इन लकारो के लिए प्रयुक्त सूत्रों को एकैक करके देखते है।

28) वर्तमाने लट्
वैसे तो इस सूत्र को हम पीछे देख ही आये है (सूत्र-11) । वर्तमान किसको कहेंगे? _प्रारब्ध: अपरिसमाप्तश्च इति

वर्तमान:_ अर्थात् आरम्भ किया हुआ कार्य जब तक समाप्त ना हो तब तक उस काल को वर्तमान कहेंगे।। जैसे राम यदि भोजन बना रहा हो तो भले ही बनाने में दो घण्टा लगे, फिरभी उस पुरे काल को वर्तमान ही कहेंगे। अर्थात् _रामः पचति_ ही रहेगा।

संस्कृत में तीन भूतकाल होते है: सामान्य(अद्यतन), ह्यस्तन(अनद्यतन), परोक्ष।
ये तीनो भूतकाल एक सूत्र के अन्तर्गत आते है, वह है,
29) भूते
अर्थात् इस सूत्र की अनुवृत्ति आगे के तीनों भूतकाल-निर्दिष्ट सूत्रों में जायेगी।

पहले सामान्य भूतकाल के लिए जो सूत्र है उसको देखते है:
30) लुङ्
यह सामान्य भूतकाल को कहते है। अर्थात् अद्यतन भूतकाल। आज का जो भूतकाल है वह। जैसे की आज सुबह में मन्दिर गया। _अद्य अहं मन्दिरम् अगमम्।_

31) अनद्यतने लङ्
अर्थात् (अन + अद्यतन) जो आजका नही है वह, ह्यस्तन भूतकाल। उसको लङ् कहते है।
कल राम मंदिर गया था। _ह्यः रामः मन्दिरम् अगच्छत्।_

32) परोक्षे लिट्
परोक्ष अर्थात् जो इन्द्रियों से पर हो। जैसे की राम वन में गये। इस वाक्यको बोलने वाला तब वहा हाजर नही जा जब राम वन में गये। इसलिए ये घटना उसके लिए परोक्ष हुई। तो उस काल में लिट्-लकार होता है। जैसे
_रामः वनं जगाम।_

आज हमने चार सूत्र किये।
क्रमशः.........

★लेख-10★
कल वर्तमान और भूतकाल के सूत्र देखे। आज भविष्यकाल के सूत्रों को देखते है। संस्कृत में भविष्यके लिए दो लकार है।
33) लृट् शेषे च
इस सूत्रमें " भविष्यति " की अनुवृत्ति आकर सूत्रार्थ हुआ _भविष्य अर्थ में लृट्-लकार होता है।_ लेकिन ये लकार सामान्य भविष्य के लिए
है। अर्थात् आज के दिन का जो भविष्य है वह। जैसे,
_सायङ्काले रामः मन्दिरम् गमिष्यति।_

34) अनद्यतने लुट्
यह लकार लृट् -लकार का अपवाद है। अर्थात् आज को छोडकर बाकी के भविष्यकाल में लुट् होता है। जैसे,
_श्वः रामः ग्रामं गन्ता_
परश्वः अहं पुस्तकं पठितास्मि

अब
अ) राम जीवनभर व्याकरण पढ़ेगा।

ब) अगले रविवार में गाँव जाऊँगा।
इन दोनों वाक्यो को देखिये। दोनों क्रिया आज के भविष्य की नही है , तो इसमें सामान्य भविष्य (लृट्) न होकर लुट् ही होना चाहिए । सही न? लेकिन ऐसा नहीं है। तो फिर कौनसा लकार होगा? उसके लिये ये सूत्र देखले....

35) नानद्यतनवत् क्रियाप्रबन्धसामीप्ययोः
इस सूत्र में कहा गया कि इन दो प्रसंगों में अनद्यतन नहीं होगा। अनद्यतन अर्थात् (अन + अद्यतन) जो आजका नही है। अर्थात् इन दो प्रसंगों में अनद्यतन न होके अद्यतन (आज का) ही हो। कौन से दो प्रसङ्ग?
A) क्रियाप्रबन्ध: अर्थात् क्रिया का सातत्य। कोई क्रिया सतत हो रही हो तो उसमें आजके कालवाची लकारे हो यह अर्थ। जैसे उपरोक्त उदाहरण देखे तो....

" राम जीवनभर व्याकरण पढ़ेगा। " यह वाक्यमे पढ़ने की क्रिया सतत होगी। तो उसमें ' पठिता '
ऐसा न होकर " रामः यावत् जीवं व्याकरणम् पठिष्यति " ऐसे सामान्य भविष्य ही होगा।
ये सूत्र भूत और भविष्य दोनों के लिए है तो भूतकाल का उदाहरण देखले।
" राम जब तक जिया तबतक व्याकरण पढता रहा। "
ये क्रिया वैसे तो आज के भूतकाल की नही है इसलिए अपठत् ऐसा ही होना चाहिए लेकिन यहां क्रिया की सातत्यता है इसलिए सामान्य भूतकाल (लुङ्) ही होगा।
" यावत् जीवं रामः व्याकरणम् अपाठीत्। "

B) सामीप्य: अर्थात् समीपता।
वर्ष में अनेक रविवार आते है, लेकिन उनमेंसे जो आगामी रविवार है वह सबसे समीप है। तो वैसे तो उसमे सामान्य-भविष्य (लृट्) न होकर लुट् (गन्तास्मि) ही होना चाहिए। लेकिन सब रविवारों में उनकी अत्यन्त-सामीप्यता होने से सामान्य-भविष्य ही होगा। जैसे,
" आगामी रविवासरे अहं ग्रामं गमिष्यामि। "

ये बात भूतकाल में भी लागू होती है। जैसे,
" राम पिछले रविवार को ही गाँव गया। "
इसमें भी " अगच्छत् " होना चाहिए। लेकिन पिछला रविवार बीते हुए सभी रविवारों में अत्यन्त-समीप है तो उसमें सामान्य-भूत ही होगा,
" रामः अतिक्रान्ते रविवासरे ग्रामं अगमत्। "
आज तिन सूत्र हुये।

क्रमशः......

★लेख-11★
आज हम लिङ् और लोट् लकार के सूत्र करेंगे।

36) विधिनिमन्त्रणामन्त्रणाधीष्टसम्प्रश्नप्रार्थनेषु लिङ् (३।३।१६१)

इस सूत्र से विधिलिङ्-लकार कहा कहाँ कहाँ हो यह दिया है।
A) विधि: - आज्ञापनम्-प्रेरणम् = आज्ञा देना या प्रेरणा देना।
रामः ग्रामं गच्छेत् - राम गाँव जाए। यहा आज्ञा दी गई है।

B) निमन्त्रणम् - नियतरूपेण आह्वानम् = अवश्य निमन्त्रित करना।
मम गृहे भवान् आगच्छेत् - मेरे घर आपको आना ही पड़ेगा। यहा आग्रहपूर्वक बुलाना है।

C) आमन्त्रणम् - कामचारेण आह्वानम् = मात्र formality के लिए बुलाना, आये या न आये।
मम जन्मदिनप्रसङ्गे भवान् आगच्छेत् - यदि समय मिले तो आप मेरे जन्मदिन-प्रसङ्ग में आना।

D) अधीष्ट: - सत्कारपूर्वकम् आह्वानम् = किसी ज्येष्ठ वा पूजनीय व्यक्ति को सत्कारपूर्वक बुलाना।
मम पुत्रम् भवान् उपनयेत् - मेरे पुत्र का उपनयन आप कराये।

E) सम्प्रश्न: - सम्यक् प्रश्नः = अच्छी तरह प्रश्न पूछना।
किम् अहम् आगच्छेयम् ? - क्या में आ सकता हु?

F) प्रार्थनम् - याच्ञा = प्रार्थना
भवति मे प्रार्थना भवान् आगच्छेत् - मेरी आपसे विनंती है कि आप आये।

37) लोट् च (३।३।१६२)
यह सूत्र लोट्-लकार के लिए है। इस सूत्र में सूत्र-36 से " _विधिनिमन्त्रणामन्त्रणाधीष्टसम्प्रश्नप्रार्थनेषु_ " की अनुवृत्ति आती है। अर्थात् जिस जिस अर्थ में लिङ् होता है वहा लोट् भी होता है।
इसलिए यहां उपरोक्त उदाहरण ही लोट्-लकार में देते है।

A) रामः ग्रामं गच्छतु।
B) मम गृहे भवान् आगच्छतु।
C) मम जन्मदिनप्रसङ्गे भवान् आगच्छतु।
D) मम पुत्रम् भवान् उपनयतु।
E) किम् अहम् आगच्छानि?
F) भवति मे प्रार्थना भवान् आगच्छतु।

आज हमने दो सूत्र किये।
क्रमशः.........

★लेख-12★
कल हमने विधिलिङ् और लोट्-लकार देखे।
आज आशिर्लिङ् देखते है।
38) आशिषि लिङ्लोटौ
इस सूत्र से किसीको आशीर्वचन देना हो तो आशिर्लिङ् होता है। आशीष अर्थात् कोई इष्ट वस्तु प्राप्त हो उसकी कामना करना। जैसे,

चिरं जीव्यात् भवान्। आप की उम्र लम्बी हो।

यहा उपरोक्त सूत्र से इसी अर्थ में लोट् भी हो सकता है।
चिरं जीवतु भवान् । आप की उम्र लम्बी हो।

एक दूसरा सूत्र देखे जिसके बारे में हम जानते ही है , उपयोग भी करते है लेकिन सूत्र पता नही है।

देवदत्त: ह्य: मन्दिरम् गच्छति स्म।
इसी प्रकार के वाक्यका हम उपयोग करते ही है। जब भूतकाल की क्रिया कहनी हो तब लट्-लकार(वर्तमान काल) का उपयोग करके भी भूतकाल का निर्देश कर सकते है। कैसे? स्म-शब्द का उपयोग करके। "उसका सूत्र है......
39) अपरोक्षे च
इस सूत्र में " भूत, अनद्यतन, लट्, स्मे " इन चारों की अनुवृत्ति आती है। अर्थ हुआ _अनद्यतन-भूतकाल में स्म-शब्द उपपद होने पर लट्-लकार होता है।_
देवदत्त: ह्य: मन्दिरम् गच्छति स्म। इस वाक्य में "गच्छति" यह पद लट्(वर्तमानकाल) का है लेकिन वाक्यमे "स्म-शब्द" उपपद होने पर अर्थ तो भूतकाल का ही निकलेगा।
" देवदत्त कल मन्दिर गया था " ऐसा।

एक तीसरा सूत्र देखे जिसमे भी स्म-शब्द उपपद में हो तो क्या होगा।

40) लट् स्मे
इस सूत्र में "भूत, परोक्षे " इन दोनों की अनुवृत्ति आती है। तो अर्थ हुआ _अपरोक्षे अर्थात् लिट्-लकार में भी लट्-लकार होगा, यदि "स्म-शब्द" उपपद हो तो।_ जैसे,

रामः वनं जगाम। राम वनमे गये।
ये वाक्य लिट्-लकार का है किन्तु यदि हम यहां भी लट्-लकार का उपयोग करना चाहे तो सिर्फ "स्म-शब्द" के उपयोग से ही कर सकते है और फिरभी अर्थ तो वही रहेगा।
रामः वनं गच्छति स्म। राम वनमे गये।

आज तीन सूत्र किये।
क्रमशः......

★लेख-13★
आज हम लृङ्-लकार करेंगे। " यदि राम पढ़ेगा/पढता तो वो विद्वान् बनेगा/बनता " - ऐसी वाक्य-रचना से हम सुपरिचित है ही। यह लृङ्-लकार है। लेकिन उसको समझने की लिए पहले एक और सूत्र देखना पड़ेगा।
41) हेतुहेतुमतोर्लिङ् (3/3/156)
हेतु = कारण
हेतुमान् = फल/क्रिया
हेतु-हेतुमान् = कारण-कार्य का सम्बन्ध
वाक्य में 'पढ़ना' कारण है, और 'विद्वान् बनना' कार्य/फलश्रुति है।

तो सूत्रार्थ हुआ, _हेतु और हेतुमान् निमित्त हो तो वहां लिङ्-लकार होता है_
यदि रामः पठेत् तर्हि सः
विद्वान् भवेत्।

यह सूत्र समझने के बाद अब यदि हम लृङ्-लकार देखे तो समझनमें में सरलता होगी।
42) लिङ्-निमित्ते लृङ् क्रिया-अतिपत्तौ (3/3/139)

क्रिया-अतिपत्ती = क्रिया का सिद्ध न होना।
लिङ् का निमित्त क्या है? तो सूत्र-41 अनुसार होतु और हेतुमान का संयोग याने कारण-क्रिया का सम्बन्ध।

अब उपरोक्त वाक्य में " पढ़ेगा तो विद्वान् बनेगा " ऐसा कारण-कार्य सम्बन्ध है। तो इसमें क्रिया-अतिपत्ति कैसे होगी? जब हमें पता चले की राम पढ़नेवाला है ही नही, इसलिए वो विद्वान् बनेगा ही नही। अर्थात् " न पढ़ने के कारण विद्वान् न बनना ही क्रिया की असिद्धि (क्रिया-अतिपत्ति) " है। तो इस क्रिया-असिद्धि में लृङ्-लकार होगा।

यदि रामः अपठिष्यत् तर्हि विद्वान् अभविष्यत् = यदि राम पढेगा तो विद्वान् बनेगा (वो पढेगा ही नही, इसलिए विद्वान् बनेगा ही नही यह भावार्थ)

लेकिन,
राम ने पढा ही नही इसलिए विद्वान् न बन पाया। इस प्रकार का भूतकाल-वाक्य हो तो? उसके लिए अगला सूत्र है।
43) भूते च (3/3/140)
यहा सूत्र-42 से पूर्ण सूत्र की अनुवृत्ति आकर अर्थ बना _हेतु-हेतुमान निमित्तक जो लिङ् है उसमें यदि क्रिया की सिद्धि न (क्रिया-अतिपत्ति) हो तो भूतकाल में भी लृङ्-लकार होता है।_

सूत्र-42 में भविष्य में होनेवाली क्रिया-अतिपत्ति में ही लृङ्-लकार था, इस सूत्रसे भूतकाल में भी कह दिया।

यदि रामः अपठिष्यत् तर्हि सः विद्वान् अभविष्यत् = यदि राम पढता तो विद्वान् बनता = राम पढा नही इसलिए विद्वान् न बन सका।

हम देख सकते है कि भूत और वर्तमान दोनों में वाक्यरचना तो समान ही है, अपठिष्यत्-अभविष्यत्। इसलिए सन्दर्भ-अनुसार वाक्य का अर्थ समझना चाहिए।

आज तीन सूत्र किये।
क्रमशः.......

★लेख-14★
कल हमने लकार किये। आज कुछ विशेष सूत्र करते है।
44) अस्मदो द्वयोश्च
इस सूत्र में " एक्समिन्, बहुवचनम्, अन्यतरस्याम् " इन तीनो की अनुवृत्ति आकर अर्थ हुआ _उत्तम-पुरुष में एकवचन और द्विवचन में विकल्पसे बहुवचन होता है_
जैसे,
अहं पठामि। = में पढता हु।
इस वाक्य को इस तरह भी बोला जा सकता है....

वयं पठाम: = हम पढते है। (में पढता हु ऐसा अर्थ)

द्विवचन में भी इसी तरह....
आवां गच्छाव:। = हम दोनों जाते है।

इसको इस तरह लिख सकते है...
वयं गच्छाम:। = हम जाते है। (हम दोनों जाते है इस अर्थमें)

ये विकल्प से होता है। इसलिए पक्षमे मूल वाक्य तो होंगे ही...
अहं पठामि।
आवां गच्छाव:।

लेकिन विशेषण के रूपमे तो ऐसा नही होगा। जैसे,
अहं रामः पठामि।
आवां रामलक्ष्मणौ गच्छाव:।

इसको इस तरह नही लिख सकते की.....
वयं रामः पठाम:।
वयं रामलक्ष्मणौ गच्छामः।

45) पुमान् स्त्रिया
यहा " तल्लक्षण: चेदेव विशेष, शेष: " की अनुवृत्ति आकर अर्थ बना _पुल्लिंग-शब्द स्त्रीलिंग-शब्द के साथ हो तो मात्र पुल्लिंग-शब्द शेष रहता है, यदि वहा मात्र लिङ्गभेद ही विशेष हो, बाकी सब प्रकृत्यादि समान हो।_
जैसे,
ब्राह्मण और ब्राह्मणी = ब्राह्मणौ
यहा ब्राह्मण = पुल्लिंग
ब्राह्मणी = स्त्रीलिंग
यहा पे सिर्फ लिङ्ग-भेद ही है तो यहां पुल्लिंग-शब्द शेष रहेगा और उसका ही द्विवचन होगा " ब्राह्मणौ " ऐसा।। अर्थात् " ब्राह्मणौ " इस शब्दसे " ब्राह्मण और ब्राह्मणी " दोनों का ग्रहण हो जाएगा।

46) भ्रातृपुत्रौ स्वसृदुहितृभ्याम्
यहा भी,
भ्रातृ और स्वसृ में भ्रातृ शेष रहेगा।
पुत्र और दुहितृ में पुत्र शेष रहेगा।
भ्राता च स्वसा = भ्रातरौ
पुत्र: च दुहिता = पुत्रौ
अर्थात् " भ्रातरौ " शब्द से " भाई और बहन " दोनों का ग्रहण हो जाएगा और " पुत्रौ " शब्द से " पुत्र और पुत्री " दोनों का ग्रहण हो जाएगा।

मम भ्रातरौ आगच्छत:। मेरे भाई-बहन आ रहे है।
मम पुत्रौ पठत:। मेरे पुत्र और पुत्री पढ रहे है।

47) पिता मात्रा
अर्थात् पितृ-शब्द के साथ यदि मातृ-शब्द हो तो पिता-शब्द विकल्पसे शेष रहेगा।
अर्थात् " पितरौ " शब्द से " माता और पिता " दोनों का ग्रहण हो जाएगा।
विकल्पमे " मातापितरौ " शब्द भी बनेगा।

एतौ मम पितरौ/मातापितरौ। = ये मेरे माता-पिता है।

48) श्वसुर: श्वश्र्वा
श्वसुर-शब्द श्वश्रू के साथ विकल्पसे शेष रहता है।

एतौ मम श्वशुरौ/श्वश्रूश्वशुरौ। ये मेरे सास-ससुर है।

49) त्यदादीनि सर्वै: नित्यम्
अर्थात् _त्यदादि-शब्द सबके साथ (त्यदादि के साथ, त्यदादि-भिन्न के साथ भी) नित्य रूपसे शेष रहता है, अर्थात् यहा विकल्प से वाक्य नही हो सकता।_
सः च रामः। = तौ
यः च कृष्ण:। = यौ

लेकिन यदि दो त्यदादि-शब्द हो तो कौन शेष रहेगा? जैसे,
सः च यः = ?
त्यदादि-गण : त्यद्, तद्, यद्, एतद्, इदम्, अदस्, एक, द्वि, युष्मद्, अस्मद्, भवतु, किम्।
" _त्यदादीनां मिथो यत् यत् परं तत् शिष्यते_ " इस वार्तिक से जो पर है (बादमे आनेवाला) वो शेष रहेगा।
सः और यः में यः बादमे आता है। तो वही शेष रहेगा।

सः च यः = यौ
यः च कः = कौ

आज हमने 6 सूत्र किये।
क्रमशः.......

★लेख-15★
आज के लेख में कुछ संज्ञा-सूत्र करते है। संज्ञा अर्थात् क्या? तो व्यवहार में पुत्रजन्म के बाद उसका नामकरण करते है जिससे की उसके साथ जीवनपर्यन्त व्यवहार किया जाए। यदि नामकरण ही किसीका न किया जाय तो सोचिये कितनी समस्या आयेगी!!!!! उसके साथ व्यवहार ही नही कर सकते।

व्याकरण में भी नामकरण-विधि पहले अध्याय में ही की जाती है जिससे बाकीके अध्याय तक अच्छा व्यवहार किया जा सके। नामकरण-विधि को ही संज्ञा कहते है।
50) वृद्धिरादैच्
अन्वय - वृद्धि: आत् ऐच्
अर्थः - वृद्धि: = आ ऐ औ (यहा ऐच् प्रत्याहार है, जिसमे 'ऐ औ' ये दो वर्ण आते है।)
यह सूत्र "वृद्धि" ऐसा नामकरण करती है। किसका? तीन वर्णो का : आ ऐ औ
अर्थात् जब भी " वृद्धि हो " ऐसा कहा जाए तो ये तीन वर्ण उपस्थित हो जायेंगे।

51) अदेङ् गुण:
अन्वय - अत् एङ् गुण:
अर्थः - गुण: = अ ए ओ (यहा एङ् प्रत्याहार है जिसमे 'ए ओ' ये दो वर्ण आते है।)

यह सूत्र "गुण" ऐसा नामकरण करती है। किसका? अ ए। ओ
अर्थात् " गुण हो " ऐसा कहने पर ये तीनो उपस्थित हो जायेंगे।

52) हलोनन्तरा: संयोग:
गजेन्द्र शब्द किन किन वर्णो से बना है?
गजेन्द्र = ग् अ ज् ए न् द् र् अ
यहा - अ ए अ तीनो स्वर है।
यहा - ग् ज् न् द् र् पाँचो व्यंजन है।

गजेन्द्र-शब्दमे देखे तो "ग् और ज्" ये दो व्यंजन के मध्यमे "अ" स्वर आ गया। जिसको व्यवधान कहते है। इस व्यवधान से "ग् ज्" इन दोनों व्यंजनो के बीच अन्तर(distance) हो गया।
लेकिन "न् द् र्" इन तीनो व्यंजन के मध्य में कोई भी स्वर नही है। अर्थात् व्यवधान नही है। जिससे तीनो के बीच कोई अन्तर(distance) नही रहा (न अन्तर = अनन्तर)।
तो इन तीनो की "संयोग" संज्ञा(नामकरण) हुई।
जबभी "संयोग" ऐसा कहा जाए तो ये समझना की व्यंजनो के बीच कोई स्वर का व्यवधान नही है।
राष्ट्र = र् आ ष् ट् र् अ
यहा "ष् ट् र्" की संयोग-संज्ञा होगी।

53) सुप्तिङन्तं पदम्
अर्थः - सुबन्त और तिङन्त शब्दो की पद-संज्ञा(नामकरण) होती है।
रामौ = राम + औ
यहा राम-शब्द प्रातिपदिक है। औ-शब्द सुप-प्रत्यय है।
अर्थात् रामौ-शब्द सुबन्त है क्योंकि सुप्-प्रत्यय राम-शब्द के अन्तमे है। तो उपरोक्त सूत्र से "रामौ" की पद संज्ञा हुई।

वैसे ही,
पचति = पच् + शप् + तिप्
पचति = पच + तिप्
यहा पच-शब्द धातु है। तिप्-शब्द तिङ्-प्रत्यय है।
अर्थात् पचति-शब्द तिङन्त है क्योंकि तिङ्-प्रत्यय पच-धातु के अन्तमे है। तो उपरोक्त सूत्र से "पचति" की पद संज्ञा हुई।

अर्थात्,
राम-शब्द के जो " राम: रामौ रामा:" इत्यादि 21 रूप बनते है उन सबकी पद-संज्ञा होगी।
पच्-धातु के 10 लकार के जो "पचति/पचते, पक्ष्यति/पक्ष्यते, अपचत/अपचत, पचतु/पचताम्, पचेत्/पचेत" इत्यादि रूप बनेंगे उन सबकी पद-संज्ञा होगी।

54) तिङ्शित् सार्वधातुकम्
ये सूत्र "सार्वधातुक" संज्ञा करता है।
A) तिङ् अर्थात् नीचे दिए गए जो 18 प्रत्यय है वे.......

परस्मैपदके 9 प्रत्यय

	एक	द्वि	बहु

प्रथम	तिप्	तस्	झि
मध्यम	सिप्	थस्	थ
उत्तम	मिप्	वस्	मस्

आत्मनेपदके 9 प्रत्यय

	एक	द्वि	बहु
प्रथम	त	आताम्	झ
मध्यम	थास्	आथाम्	ध्वम्
उत्तम	इट्	वहि	महिङ्

इन 18 प्रत्ययो की सार्वधातुक-संज्ञा होती है।

B) शित् = श् यस्य इत् सः (श् + इत् = शित्)
पीछे के लेखो 'लिखति' की सिद्धि समय इत्-संज्ञा पढ गये है। फिर पुनरावर्तन कर लेते है।

शप् एक प्रत्यय है, जिसका उपयोग के समय सिर्फ "अ" बचता है।
रसोई बनाते समय सब्जी को ऐसे ही नही पकाते। पहले त्वचा को छीलते-काटते है। फिर उपयोग में लेते है। वैसे ही, शप्-प्रत्यय को उपयोग में लेने से पहले आगे-पीछे छीलते-काटते है। अर्थात् शप् में आगे-स्थित श् की और पीछे-स्थित प् की इत्-संज्ञा करके " तस्य लोपः " सूत्र से लोप कर देते है, और सिर्फ "अ" शेष रहता है।
तो शप्-प्रत्यय शित् (श् यस्य इत् अस्ति सः) हुआ।
शतृ, शानच्, शस्, श्यन्, श्ना, श्नम् इत्यादि शित् है क्योंकि सभीके श् की इत्-संज्ञा होती है।
इसलिए उपरोक्त सूत्र से शित्-शब्दो की "सार्वधातुक" संज्ञा होती है।

55) आर्धधातुकं शेषः
यह सूत्र "आर्धधातुक" संज्ञा करता है।

यहा "शेषः" अर्थात् तिङ्-शित् दोनों से जो शेष रह गए उन सभीकी "आर्धधातुक" संज्ञा होगी।
अर्थात्,
क्त, क्तवतु, तव्य, तव्यत्, अनीयर्, ण्वुल्, तृच्, ल्युट्, इत्यादि की आर्धधातुक संज्ञा होगी।

आज हमने 6 सूत्र किये।

मित्रो! जैसा की हमने 50 सूत्र करने के लिए यह लेखमाला शुरू की थी। वह पूर्ण हुआ। अतः यह लेखमाला पूर्ण करते है। कुछ विराम के बाद अगले 50 सूत्रों के लिए फिर लेखमाला शुरू करेंगे। तब तक इन सूत्रों को याद रखने का प्रयत्न जरूर कीजियेगा।

【 किसीको इस लेखमाला-अन्तर्गत सभी सूत्रोंकी pdf file चाहिए तो मेरे व्यक्तिगत नम्बर पे अपना Email-ID भेज सकते है। 】